सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में समर्पण की भावना का अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी मिश्रा*

सारांश

बच्चों का सर्वांगीण विकास में अध्यापकों की अहम भूमिका होती है। अध्यापकों की शिक्षण अभियोग्यता उसकी क्षमता दायित्व निर्वहन की कला की स्पष्ट छाप बच्चों में परिलक्षित होती है। ऐसे में अध्यापकों का पूर्ण निष्ठा एवं समर्पण की भावना से शैक्षिक दायित्व का निर्वहन करना आज की महती आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध का विषय शिक्षकों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता, उसकी शिक्षण के प्रति वृति, अध्ययन करना, शिक्षकों के सतत् विकास की धारणा को मजबूत बनाना है। शिक्षकों के क्षेत्र को समाज की नवीन शैक्षिक मॉगों के अनुकूल पुर्नगठित कर उन्हें एक सार्थक एवं आवश्यकता आधारित इकाई बनाने की आज के समय में आवश्यकता है। शिक्षक के बारे में किसी भी प्रकार का चिन्तन क्यों न हो वह निरर्थक नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध में अनुसूची के माध्यम से सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालय के अध्यापकों की समर्पण की भावना की जांच की गई है। तथ्यों के विश्लेषण से सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की समर्पण की भावना में अन्तर पाया गया है। जबकि महिला शिक्षकों की समर्पण भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

अध्यापक वह धुरी है, जिसके चारों ओर सामाजिक चक्र घूमता है , लेकिन आज के आर्थिक युग में अध्यापक के महत्व को नजरअन्दाज कर दिया गया है, जो अनुचित है, जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से अध्यापकों की मनोवृत्तियों पर पड़ा है। कहा जाता है कि शिक्षा तभी जीवन से जुड़ती है जब वो साधी जाती है। वो एक वस्तु नहीं है, जो स्वयं ही किसी के पास आ जाये, इसके लिए अध्यापक को स्वयं को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत करना जरूरी है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

भारत के इतिहास के गौरवमयी पर्व पर अपने विचारों के माध्यम से अध्यापक समुदाय से राष्ट्रीय अस्मिता एवं अखण्डता को कायम रखने हेतु अपने व्यवसाय के प्रति समर्पण को कायम रखते हुए अपनी कार्यशैली में इस दिशा में पर्याप्त जीवंतता लाने में सहयोग दे सकेगा।

''मंजिल उसी को मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है,
पंखों से कुछ नहीं होता,
हौंसलों से उड़ान होती है।''

निश्चित ही यह शोध अध्यापकों में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रेरणा का संचार करते हुए नवीन कार्यो का आरम्भ करने की दिशा में मददगार होगा। शिक्षण भावी जीवन में पूर्ण इच्छा शक्ति के साथ समर्पित भाव से कार्य कर सकेगें।

समस्या कथन

''सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में समर्पण की भावना का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य

1. सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत कुल अध्यापकों की समर्पण की भावना का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की समर्पण की भावना का अध्ययन करना।
3. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की सर्मपण की भावना का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत कुल अध्यापकों की समर्पणकी भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत

*प्राचार्या, भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, श्री गंगानगर (राजस्थान)

पुरूष अध्यापकों की समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की समर्पण की भावना में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

शोध अध्ययन के परिसीमन

अनुसंधान के सार्थक निष्कर्ष के निमित्त अध्ययन का परिसीमन एक आवश्यक कदम है। प्रत्येक व्यक्ति के पास समय, शक्ति, साधन की एक सीमा होती है। इस शोध की प्रकृति, समय व साधन की सीमाओं को देखते हुए इसकी निम्नलिखित परिसीमाएँ निर्धारित की गई हैं–

1. यह शोध श्रीगंगानगर जिले तक सीमित रखा गया है।
2. न्यादर्श के रूप में कुल 60 अध्यापकों (महिला व पुरूष) को लिया गया हैं।
3. सरकारी विद्यालय के कुल 30 (15 पुरूष+ 15 महिला) अध्यापकों को चयनित किया गया है।
4. गैर–सरकारी विद्यालय के कुल (15 पुरूष + 15 महिला)

तकनीकी शब्दों परिभाषीकरण

1. सरकारी विद्यालय – केन्द्र सरकार या राज्य सरकार द्वारा ऐसे विद्यालय जिन पर पूर्णतः नियन्त्रण सरकार का होता है। अध्यापकों की नियुक्ति सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा की जाती हैं।
2. गैर–सरकारी विद्यालय – गैर–सरकारी विद्यालय राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ऐसे निजी विद्यालय जिनका संचालन शिक्षा विभाग, राजस्थान,बीकानेर के नियमानुसार होता है, परन्तु अध्यापकों की व्यवस्था स्वयं तथा निजी स्तर पर की जाती है।
3. समर्पण की भावना – वस्तुओं, घटनाओं, व्यक्तियों तथा विचारों के सम्बन्ध में हमारी कुछ समाजीकृत धारणाएँ होती है। बालक के जन्म से ही आत्म, मनस्, चेतना व व्यवहार में परिवर्तत होता है। इनके कारण उसे अपने स्व की अनुभूति होती है। अनुभूति का अहसास अपने जीवन में हर पहलू में संस्कृति, समाज,परिवार, परम्परा आध्यात्म में उतारता है। इन अनुभवों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से समर्पण की भावना से लागू करता है। यही समर्पण की भावना है।

शोध में प्रयुक्त विधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में दत्तों का संकलन के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावाली का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

जब किसी जनसंख्या में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी इकाईयों को चुना जाता है, तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते है। न्यादर्श समष्टि का वह अंश होता है, जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है।

सारणी संख्या – 1

संगठन	सरकारी	गैर–सरकारी	योग
महिला	15	15	30
पुरूष	15	15	30
कुल योग	30	30	60

सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान
2. प्रमाप–विचलन
3. टी–मूल्य

विश्लेषण

अनुसंधान के आंकड़ों के संकलन तालिकाकथन तथा सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग के बाद प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या का महत्वपूर्ण स्थान है। शोधकर्त्ता को सही निष्कर्ष भी तभी प्राप्त हो सकता है, जब संकलित आंकड़ों का विश्लेषण सही प्रकार से किया जाए।

विश्लेषण

सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत कुल अध्यापकों की समर्पण की भावना

सारणी संख्या – 2

समूह	पदों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
सरकारी विद्यालयों के कुल अध्यापक	30	124.50	9.40	2.36
गैर–सरकारी विद्यालयों के कुल अध्यापक	30	119.17	8.00	

(df=N1+N2-2=15+15-2=28)

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के कुल अध्यापकों के मध्यमान क्रमशः 124.50 तथा 119.17 है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.40 तथा 8.0 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 2.36, स्वतन्त्रता के अंश 5.8 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2.00 से अधिक प्राप्त हुआ है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की समर्पण की भावना

सारणी संख्या –3

समूह	पदों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
सरकारी विद्यालयों के कुल पुरूष अध्यापक	15	125.16	8.00	2.10
गैर–सरकारी विद्यालयों के कुल पुरूष अध्यापक	15	119.84	5.70	

(df=N1+N2-2=15+15-2=28)

तलिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकी व गैर सरकारी विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों के मध्यमान क्रमशः 125.16 तथा 119.84 है तथा मानक विचलन क्रमशः 8:00 तथा 5.70 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 2.10 है, स्वतन्त्रता के अंश 2.8 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2.10 से अधिक प्राप्त हुआ है, अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की समर्पण की भावना

सारणी संख्या –4

समूह	पदों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
सरकारी विद्यालयों के कुल महिला अध्यापक	15	123.80	9.43	1.51
गैर–सरकारी विद्यालयों के कुल महिला अध्यापक	15	118.50	9.79	

(df=N1+N2-2=15+15-2=28)

तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सरकी व गैर सरकारी विद्यालयों के महिला अध्यापकों के मध्यमान क्रमशः 123.80 तथा 118.50 है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.43 तथा 9.79 है। गणना से प्राप्त टी मूल्य 1.51 है, स्वतन्त्रता के अंश 2.8 के अनुसार 0.05 स्तर पर 2.10 से अधिक प्राप्त हुआ है, अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

निष्कर्ष

1. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत कुल अध्यापकों की समर्पण की भावना में अन्तर पाया गया है। वे अपने शिक्षण कार्य के प्रति पूर्णरूप से समर्पित नहीं पाए गए।
2. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत पुरूष अध्यापकों की समर्पण भावना में भी अन्तर पाया गया है। वे अपने कार्यों के प्रति एक समान भावना से समर्पित नहीं पाए गए।
3. सरकारी व गैर–सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की समर्पण भावना में भी अन्तर पाया गया है। वे अपने कार्यों के के प्रति एक समान भावना से समर्पित पाई गई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

वर्मा, रामपाल सिंह "शिक्षा तथा भारतीय समाज" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

त्यागी, गुरसरनदास "शिक्षा के दार्शनिक व सामाजिक आधार" अग्रवाल पब्लिकेशन्स (2008)

शर्मा, शंकर दयाल "शिक्षा के आयाम" प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2005)

डॉ. अंशु मंगल "शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, स्मंक विश्लेषण एवं सांख्यिकी" राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा

शर्मा, रजनी "शिक्षा, समाज व दर्शन"

शर्मा, आर. ए. "शिक्षा तकनीकी" (1990) लायल बुक डिपो, मेरठ